14_rajeshwari_Layout 1 5/1/2014 6:05 PM Page 173

# क्या चाहती हैं वोटर औरतें ?

**राजेश्वरी देशपाण्डे**

**अनुवाद : नरेश गोस्वामी**

पिछले दो दशकों के दौरान चुनावों में स्त्रियों की भागीदारी का मिज़ाज और उनके मतदान का क्रमिक विकास समझने के लिए राष्ट्रीय चुनाव सर्वेक्षण की शृंखला एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। सर्वेक्षण के आँकड़ों पर आधारित इस विश्लेषण से स्त्रियों के मतदान के संबंध में अभी तक तीन प्रकार के प्रेक्षण सामने आये हैं। पहला प्रेक्षण योगेंद्र यादव के एक अध्ययन के ज़रिये नवें दशक के उस उभार की तरफ़ इशारा करता है जब स्त्रियों और हाशिये के अन्य समूहों ने चुनाव-भागीदारी के ज़रिये एक तरह की लहर खड़ी कर दी थी। दूसरे प्रेक्षण के स्रोत भी योगेंद्र यादव ही हैं। यह बताता है कि पिछले वर्षों के दौरान कांग्रेस को स्त्रियों के वोट ख़ास तौर पर मिलते रहे हैं। तीसरा प्रेक्षण मुख्यत: 2004 के चुनावी आँकड़ों पर आधारित उस सर्वेक्षण से निकला है जिसमें हमने स्त्रियों के वोट तथा उनकी राजनीति के बारे में प्रचलित धारणाओं को थोड़ा जटिल बना

14_rajeshwari_Layout 1 5/1/2014 6:05 PM Page 174



कर समझना चाहा था। यह सर्वेक्षण इस बात की ओर संकेत करता था कि स्त्रियों की मतदान-प्रकृति समझने के लिए जेण्डर का कारक स्वयं में पर्याप्त नहीं हो सकता। इससे इंगित होता था कि कई दफ़ा स्त्रियों का मतदान-व्यवहार जेण्डर के बजाय जाति और वर्ग तथा सामाजिक पदानुक्रम जैसे अन्य समीकरणों से तय होने लगता है। इस तरह भारत के चुनावी परिदृश्य में स्त्रियों के मतदान-व्यवहार को कुछ सामान्यीकृत संदर्भों में रख कर देखा जा सकता है।

## स्त्रिओं का मतदान : क्रमिक विकास

तालिका-1 में दर्शाया गया है कि मुख्य राजनीतिक दलों को वोट देने के मामले में जेण्डरगत रुझान का क्रमिक विकास किस तरह हुआ है। इसमें संकलित आँकड़ों से भारतीय चुनाव प्रणाली की जेण्डरगत व्याख्या से संबंधित तीन मसलों पर रोशनी पड़ती है। इनमें पहला मुद्दा कांग्रेस को मिलने वाले वोटों के जेण्डरगत पैटर्न से ताल्लुक़ रखता है। इससे पता चलता है कि स्त्री-मतदाताओं के बीच कांग्रेस निरंतर लाभ की स्थिति में रही है। स्त्री-मतदाताओं के बीच कांग्रेस के अलावा वाम दलों की भी मजबूत पैठ रही है। लेकिन पिछले दो दशकों के दौरान होने वाले तमाम चुनावों में वाम दलों के मत मुख्यत: देश के कुछ राज्यों तक सीमित रहे हैं। लिहाज़ा एक अखिल भारतीय स्तर का विश्लेषण करने के लिए हमें केवल कांग्रेस और भाजपा पर केंद्रित करना होगा। इस तरह तालिका-1 के अनुसार स्त्रियों के बीच भाजपा का लगातार घाटे की स्थिति में रहना विश्लेषण का दूसरा महत्त्वपूर्ण मुद्दा बन जाता है। स्त्री-मतदाताओं के बीच कांग्रेस और भाजपा की साख का यह दीर्घगामी पैटर्न दोनों प्रतिद्वंद्वी दलों के बीच वोटों का अंतर बहुत कम रह जाने पर चुनाव के परिणाम को ख़ासा प्रभावित कर सकता है।

तालिका में सूचीबद्ध आँकड़े जिस तीसरे मुद्दे की ओर अप्रत्यक्ष संकेत करते हैं वह स्त्री-मतों की राज्य स्तरीय भूमिका से ताल्लुक़ रखता है। हम देख सकते हैं कि मतदान के मामले में तालिका-1 जेण्डर के अंतर की भूमिका को बड़े सरल और सपाट ढंग से व्यक्त करती है। ज़ाहिर है कि इस सपाट तस्वीर को राज्य स्तरीय विश्लेषण से दुरुस्त किया जाना चाहिए। पिछले दो दशकों के दौरान भारतीय चुनावों के ज़्यादातर युद्ध राज्यों में लड़े गये हैं तथा राज्य के स्तर पर राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता के मुख़्तलिफ़ रूप सामने आये हैं। ऐसे में इस बात का जायज़ा लेना लाज़मी हो जाता है कि राज्यों की राजनीति में स्त्रियाँ अपने मत का प्रयोग किस तरह करती रही हैं। इस विश्लेषण से हम यह बात बेहतर ढंग से समझ सकते हैं कि स्त्रिओं का रुझान कांग्रेस के प्रति नरम क्यों रहा है। इससे हमें यह

**तालिका-1**

महिला-मतदान का क्रमिक विकास

| | कांग्रेस | | | भाजपा | | | वामपंथी दल | | |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| | पुरुष | स्त्रियाँ | +/- | पुरुष | स्त्रियाँ | +/- | पुरुष | स्त्रियाँ | +/- |
| 1971 | 56 | 58 | +2 | 05 | 04 | -1 | 02 | 01 | -1 |
| 1996 | 29 | 30 | +1 | 25 | 21 | -4 | 16 | 17 | +1 |
| 1998 | 27 | 30 | +3 | 39 | 33 | -6 | 08 | 10 | +2 |
| 1999 | 34 | 38 | +4 | 23 | 20 | -3 | 07 | 08 | +1 |
| 2004 | 26 | 28 | +2 | 23 | 21 | -2 | 07 | 09 | +2 |
| 2009 | 28 | 29 | +1 | 20 | 18 | -2 | 07 | 09 | +2 |

सी.एस.डी.एस. के आँकड़ा एकांश द्वारा तैयार

14_rajeshwari_Layout 1 5/1/2014 6:05 PM Page 175



जानने में भी सहायता मिलेगी कि राज्यों के चुनाव परिणामों में स्त्री-वोटों की भूमिका निर्णायक रही है या नहीं।

### क्या स्त्रियाँ कांग्रेस की समर्थक हैं ?

कांग्रेस 1996 के चुनावों से निरंतर स्त्रियों के मत हासिल करती रही है। इन मतों में पार्टी को होने वाला यह फ़ायदा 1999 में अपने सर्वोच्च बिंदु पर था। उस समय यह जेण्डरगत अंतर चार प्रतिशत अंक पहुँच गया था। लेकिन उसके बाद से यह अंतर कम और एक तरह से बेअसर होता जा रहा है। 2009 के चुनावों में कांग्रेस औरतों के वोटों को थोड़ा अपनी ओर मोड़ने में सफल रही। परंतु 2009 के चुनावों में पार्टी को जितने मतों का फ़ायदा हुआ उनमें स्त्री-मतदाताओं की बढ़ोतरी कम ही रही ( 2004 से तीन प्रतिशत) थी। लेकिन कांग्रेस के प्रति स्त्रिओं के समर्थन और पार्टी की नीतियों के प्रति उनके निर्णायक रवैये के बीच संबंध स्थापित करना हमेशा एक मुश्किल काम रहा है क्योंकि इस बात का कोई सुबूत नहीं मिलता कि पुरुषों के मुक़ाबले स्त्रियाँ कांग्रेस की नीतियों का ज़्यादा समर्थन करती रही हैं। इसी प्रकार, इस बात को केवल यह कह कर ख़ारिज नहीं किया जा सकता कि कांग्रेस को अल्पशिक्षित और राजनीति में कम दिलचस्पी रखने वाले वोटों का लाभ होता रहा है। कांग्रेस के प्रति स्त्री मतदाताओं के इस रुझान का सम्भावित सूत्र राज्यों के राजनीतिक विन्यास में तलाशा जा सकता है।

**तालिका-2**

कांग्रेस को मिलने वाले स्त्री-मतों का राज्यवार पैटर्न (1996-2009)

| राज्य | 1996 | 1998 | 1999 | 2004 | 2009 |
|---|---|---|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | -6 | 0 | -3 | +2 | +4 |
| असम | -7 | -5 | +8 | +7 | +5 |
| बिहार | -5 | -1 | +5 | -2 | +1 |
| गुजरात | +8 | +5 | +6 | -2 | 0 |
| हरियाणा | +5 | +9 | -1 | +1 | -6 |
| कर्नाटक | +12 | +9 | +10 | +4 | +3 |
| केरल | +8 | +8 | +6 | -2 | -2 |
| मध्य प्रदेश | +4 | -3 | +9 | +6 | -2 |
| महाराष्ट्र | +8 | +9 | +8 | +5 | +5 |
| ओडीशा | -3 | +9 | 0 | +2 | +3 |
| पंजाब | +4 | +2 | -5 | -2 | -2 |
| राजस्थान | -6 | +3 | 0 | +3 | -3 |
| तमिलनाडु | 0 | +3 | -2 | -5 | -2 |
| उत्तर प्रदेश | 0 | +2 | +3 | 0 | 0 |
| पश्चिम बंगाल | -3 | -4 | +1 | -2 | 0 |

14_rajeshwari_Layout 1 5/1/2014 6:05 PM Page 176



तालिका-2 में दिखाया गया है कि कांग्रेस को राज्यों के चुनावों में स्त्री-मतों का लाभ किस तरह मिलता रहा है और इसका क्रमिक विकास क्या रहा है। राज्यों के ये आँकड़े उन समष्टिगत रुझानों को बहुत दिलचस्प ढंग से भंग करते दिखायी देते हैं जिनमें कांग्रेस को स्त्रियों के वोट नियमित और निरंतर मिलते रहे हैं। अगर 2009 के बाद होने वाले पाँच आम चुनावों की तुलना की जाए तो कांग्रेस को स्त्री-मतदाताओं की ओर से मिलने वाली बढ़त का पैटर्न न केवल विभिन्न राज्यों बल्कि किसी एक राज्य विशेष में भी असमान रहा है। केवल महाराष्ट्र और कर्नाटक ही दो ऐसे राज्य हैं जहाँ कांग्रेस को लगातार समर्थन मिलता रहा है। परंतु स्त्री-वोटों के लिहाज़ से पिछले चुनावों की तुलना में 2009 के चुनावों में यहाँ कांग्रेस का प्रदर्शन काफ़ी फीका रहा। पिछले वर्षों के दौरान अन्य प्रमुख राज्यों में कांग्रेस के पक्ष में जाने वाला यह जेण्डर-लाभ काफ़ी ऊँचा-नीचा रहा है। हालिया चुनावों में केवल आंध्र प्रदेश और असम ही दो ऐसे राज्य रहे हैं जहाँ कांग्रेस ने स्त्रियों के मतों की दृष्टि से बढ़त हासिल की है जबकि पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, ओडीशा, राजस्थान तथा पश्चिम बंगाल जैसे राज्यों में स्त्री-मतों पर कांग्रेस की पकड़ कमज़ोर पड़ी है। नवें दशक से पहले कांग्रेस को बेशक स्त्री-वोटों का लाभ मिलता रहा ( इस तर्क के तहत कि अल्पसूचित तथा हाशिये के वर्ग कांग्रेस को वोट देते ही रहे हैं) पर हाल के चुनावों में यह बात बेअसर हो गयी दिखती है। इन वर्षों के दौरान कांग्रेस उत्तर प्रदेश के अलावा बिहार, हरियाणा, मध्य प्रदेश, ओडीशा, राजस्थान तथा पश्चिम बंगाल में स्त्री-मतदाताओं के बीच अपनी पूर्व स्थिति क़ायम नहीं रख पायी है। इन रुझानों को देखते हुए हमारी दलील यह है कि समष्टिगत स्तर पर कांग्रेस को अखिल भारतीय संदर्भ में बेशक जेण्डर का लाभ मिलता प्रतीत होता हो परंतु स्थानीय और क्षेत्रीय स्तर पर उसका प्रभाव क्षीण पड़ा है। राज्य स्तरीय चुनावों में कांग्रेस की स्थिति इसलिए जटिल हो जाती है क्योंकि वहाँ स्त्रियों का मत अपने आप निर्णायक होने के बजाय पार्टी तथा चुनावी प्रतिस्पर्द्धा के समूचे माहौल से निर्धारित होता है। कांग्रेस को जेण्डर का लाभ उन्हीं राज्यों में मिलता है जहाँ उसका हमेशा वर्चस्व रहा है। उसे जेण्डर की यह बढ़त उन राज्यों में उस तरह हासिल नहीं होती जहाँ राजनीति ज़्यादा प्रतिस्पर्द्धात्मक रहती है और जहाँ कांग्रेस को कड़ा राजनीतिक मुक़ाबला करना पड़ता है। हमारा मानना है कि इन तमाम स्तरों पर स्त्री-मतों का जेण्डरगत आयाम स्वयं में निर्णायक न रह कर क्षेत्रीय राजनीति की गहमागहमी में सिमट जाता है या उससे तय होने लगता है। इस तरह कांग्रेस को अखिल भारतीय स्तर पर जेण्डर का जो लाभ मिलता दिखता है वह स्त्रियों के सक्रिय समर्थन के बजाय राज्य स्तरीय जटिलताओं का समेकित परिणाम ज़्यादा होता है।

जहाँ तक 2009 के चुनावों का प्रश्न है तो कांग्रेस को वास्तव में छह राज्यों में जेण्डर-ख़ामियाजा उठाना पड़ा। परंतु इसके बावजूद राज्यों में पार्टी के चुनावी प्रदर्शन में स्त्री-मतों के इस नुक़सान का कोई एक समान असर नहीं पड़ा। उदाहरण के लिए हरियाणा में 2004 के बाद सत्री-मतों में सात प्रतिशत अंकों की गिरावट के बावजूद कांग्रेस का बेहतर प्रदर्शन रहा। यह बात केरल और राजस्थान पर भी लागू होती है। लेकिन कम से कम उपर से देखने पर तो यह लगता है कि जेण्डर मतों की दृष्टि से कांग्रेस पंजाब तथा मध्य प्रदेश जैसे राज्यों में घाटे में रही।

## स्त्री-मतदाता और भाजपा का घाटा

कांग्रेस के उलट पिछले वर्षों के दौरान स्त्री-मतदाताओं के मतों के मामले में भाजपा लगातार पिछड़ती रही है। भाजपा को राज्यों से मिलने वाले मतों को देखने से यह बात साफ़ हो जाती है। तालिका-3 में भाजपा के मतों की राज्यवार स्थिति दर्शाई गयी है।

स्त्री-मतों की जेण्डरगत स्थिति के बारे में भाजपा के ये आँकड़े हमारी समझ को और पेचीदा बना देते हैं। यह तथ्य हम पहले ही दर्ज कर चुके हैं कि समष्टिगत स्तर पर देश के चुनावों में कांग्रेस

## तालिका-3
स्त्री-मतदाता और भाजपा : राज्यवार स्थिति

| राज्य | 1996 | 1998 | 1999 | 2004 | 2009 |
|---|---|---|---|---|---|
| आंध्र प्रदेश | 00 | −2 | 00 | 00 | 00 |
| असम | 00 | 00 | −1 | 00 | 00 |
| बिहार | +1 | 00 | −1 | 00 | 00 |
| गुजरात | 00 | +6 | +4 | +1 | 00 |
| हरियाणा | 00 | 00 | 00 | −1 | 00 |
| कर्नाटक | 00 | +2 | −1 | +2 | +1 |
| केरल | 00 | +1 | 00 | 00 | 00 |
| मध्य प्रदेश | −1 | +1 | −1 | −1 | 00 |
| महाराष्ट्र | 00 | −2 | −2 | 00 | −2 |
| ओडीशा | +1 | 00 | 00 | 00 | −1 |
| पंजाब | +1 | अनुपलब्ध | 00 | 00 | 00 |
| राजस्थान | +3 | 00 | +3 | 00 | 00 |
| तमिलनाडु | 00 | +1 | 00 | 00 | 00 |
| उत्तर प्रदेश | −2 | −4 | 00 | 00 | −1 |
| पश्चिम बंगाल | 00 | −1 | +1 | 00 | 00 |

को जेण्डर का स्पष्ट लाभ मिलता रहा है। लेकिन चुनावों से एक बात और ज़्यादा स्पष्ट होती है कि जेण्डर के मामले में भाजपा कई स्तरों पर निर्णायक ढंग से घाटे की स्थिति में रही है। कांग्रेस को स्त्री-मतदाताओं के बीच दो प्रतिशत की स्पष्ट बढ़त रही है जबकि भाजपा को इतने ही प्रतिशत का घाटा हुआ है। कांग्रेस और भाजपा का तुलनात्मक आकलन करें तो स्त्री-मतदाताओं का मिज़ाज स्पष्ट रूप से भाजपा के ख़िलाफ़ रहा है। यह ठीक है कि पुरुषों के मुक़ाबले उन स्त्रियों की संख्या कहीं ज़्यादा है जिनकी इस मामले में कोई साफ़ राय नहीं पायी गयी। लेकिन इस बारे में जो लोग स्पष्ट राय रखते हैं उनमें आँकड़ों और आकार की दृष्टि से अधिसंख्य पुरुष कांग्रेस की तुलना में भाजपा को तरजीह देते हैं। इसके विपरीत कांग्रेस को भाजपा से बेहतर मानने वाले लोगों का जेण्डर का अंतर केवल एक प्रतिशत है। क्या इन आँकड़ों के आधार पर स्त्री-मतदाताओं के बीच भाजपा की स्थिति निश्चित रूप से कमज़ोर क़रार दिया जा सकता है? हमने इस सवाल का जवाब हासिल करने के लिए मल्टीवेरिएट लीनिअर रिग्रेशन का सहारा लिया। 1996 तथा 2004 के दोनों ही चुनावों में भाजपा के वोटों में जेण्डर की मौजूदगी काफ़ी कमज़ोर दिखती है परंतु इस मामले में दो बिंदुओं पर ध्यान देना ज़रूरी होगा। इसमें एक बात तो यह है कि क्षेत्रीय चरों तथा अन्य सामाजिक संकेतकों को नियंत्रित करने के बावजूद जेण्डर का भाजपा के वोटों से एक ख़ासा संख्यात्मक संबंध है। दूसरे, इससे यह संकेत भी मिलता है कि स्त्रिओं में भाजपा के बजाय कांग्रेस को वोट देने की सम्भावना ज़्यादा प्रबल दिखती है। इस प्रकार के संख्यात्मक संकेतक इंगित करते हैं कि राजनीतिक प्रक्रिया की क्षेत्रीय गहमागहमी और स्त्रियों की जेण्डरकृत पहचान को आच्छादित करने वाली तथा मतदान के मामले में उनकी पसंद तय करने वाली जटिल सामाजिक पहचानों के बावजूद भाजपा को स्त्रियों के

14_rajeshwari_Layout 1 5/1/2014 6:05 PM Page 178



वोट मिलने की सम्भावना न्यून दिखायी पड़ती है। क्या इसका अर्थ यह माना जाए कि हमारी वह पिछली दलील दुरुस्त नहीं है कि कांग्रेस को स्त्रियों के मत असल में क्षेत्रीय राजनीति के विभिन्न कारकों के संयोग से मिलते हैं या यहाँ दर्शाए गये आँकड़े कुछ निश्चित स्तरों पर ही जेण्डर की निर्णायक स्थिति की ओर इशारा करते हैं।

तालिका-3 में कांग्रेस और भाजपा के मतदाताओं की सामाजिक और जेण्डर पृष्ठभूमि दर्शायी गयी है। भाजपा की तुलना में कांग्रेस का स्त्रिओं के विभिन्न सामाजिक समूहों के बीच समर्थन आधार काफ़ी संतुलित दिखायी देता है। ऊँची जातियों, ग़रीब तथा मुस्लिम स्त्रिओं को छोड़कर कांग्रेस का समर्थन आधार स्त्रियों के लगभग सभी सामाजिक समूहों में औसतन तीन प्रतिशक अंकों के आसपास बैठता है। अगर कांग्रेस के नये वोटर की पूरी पृष्ठभूमि पर ध्यान दिया जाए तो इस सच को आसानी से समझा जा सकता है कि असल में ऊँची जातियों की स्त्रियाँ कांग्रेस को बड़ी संख्या में वोट नहीं देतीं। उसके वोट मुख्यत: समाज के अधिकारहीन वर्ग से आते हैं। पिछले वर्षों के दौरान कांग्रेस इसी आधार पर मुसलमान स्त्रियों की चहेती पार्टी रही है। इस प्रसंग में अगर कोई आश्चर्यजनक रुझान है तो वह है कांग्रेस को ग़रीब स्त्रियों से समर्थन मिलना। 2004 के चुनावों में कांग्रेस को ग़रीब वर्गों के पुरुषों के मुक़ाबले स्त्रियों ने ज़्यादा वोट दिये थे। परंतु इन चुनावों में ग़रीब पुरुषों और स्त्रिओं के मतों का प्रतिशत पार्टी के औसत वोटों से थोड़ा कम रहा था। चुनावों के मौजूदा दौर में भी कांग्रेस को ग़रीब स्त्रियों का समर्थन मिलता दिखायी नहीं देता। ग़रीब वर्ग के 26 प्रतिशत पुरुषों ने कांग्रेस को वोट दिया था जबकि स्त्रियों के मामले में यह आँकड़ा केवल 18 प्रतिशत रहा था। इस तरह ग़रीब स्त्रियों के संबंध में कांग्रेस निश्चित रूप से घाटे की स्थिति में है। राष्ट्रीय चुनाव सर्वेक्षण का विश्लेषण आगे यह भी दर्शाता है कि कांग्रेस को वोट न देने की प्रवृत्ति शहरी ग़रीब स्त्रियों के बजाय मुख्यत: देहात की ग़रीब स्त्रियों में ज़्यादा है। इसकी एक सम्भावित व्याख्या ग़रीब वर्ग के मतों के बिखराव के अलावा इस तथ्य में भी ढूँढी जा सकती है कि ग़रीब तबक़े कांग्रेस या भाजपा के बजाय छोटी पार्टियों के प्रति ज़्यादा झुकाव प्रदर्शित करते हैं। लेकिन ग़रीब स्त्रियों के मत की प्रकृति स्त्रियों के चुनावी व्यवहार में जेण्डर की भूमिका को लेकर दो अन्य सूक्ष्म सम्भावनाओं की ओर भी संकेत करती हैं।

राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन के 2004 में एकत्रित किये गये आँकड़ों के विश्लेषण ये यह प्रकट हुआ था कि अलग-अलग सामाजिक समूहों की स्त्रियों के बजाय एक ही सामाजिक समूह से वास्ता रखने वाले पुरुष और स्त्रियाँ मतदान-व्यवहार के मामले में एक-दूसरे के ज़्यादा नज़दीक दिखायी देते हैं। इससे आगे यह भी स्पष्ट हुआ था कि स्त्री-मतदाता अपने सामाजिक समूहों के मतदान-व्यवहार को ज़्यादा पुष्ट या मज़बूत करती प्रतीत होती हैं। इस प्रकार अगर आमतौर पर ऊँची जातियाँ भाजपा की तरफ़ ज़्यादा झुकाव दिखाती हैं तो ऊँची जाति की स्त्रियाँ पुरुषों की तुलना में भाजपा को ज़्यादा सतत ढंग से वोट देंगी। इस बार यही बात ग़रीब तबक़ों के कांग्रेस-मतदाताओं पर लागू होती दिखती है। इन चुनावों में कांग्रेस के समर्थन की संतुलित प्रकृति के बावजूद उसे ग़रीब मतदाताओं के बीच में औसत से कम वोट मिले हैं। कांग्रेस से दूर जाने वाले मतदाताओं की बात करें तो ग़रीब स्त्रियाँ अपने सामाजिक समूह के राजनीतिक नज़रिये को कहीं ज़्यादा दमदार ढँग से पुष्ट करती दिखायी देती हैं। लेकिन अगर यह बात सच है तो आँकड़े यह भी इंगित करते हैं कि स्त्रिओं के मतदान-व्यवहार में जेण्डर एक सीमित शक्ति के रूप में स्थापित हो चुका है। इससे पता चलता है कि ग़रीब तबक़े की स्त्रियाँ अपने पुरुष साथियों की तुलना में अलग-अलग ढंग से और ज़्यादा स्वतंत्रता के साथ मतदान करती हैं। अगर कांग्रेस को मिलने वाले समर्थन का जेण्डर और अन्य सामाजिक समूहों के आधार पर मल्टीवेरिएट लीनिअर रिग्रेसन विश्लेषण किया जाए तो उससे स्त्रियों के मत की प्रकृति में जेण्डर तथा अन्य सामाजिक संकेतकों जैसे जाति और वर्ग आदि की भूमिका काफ़ी जटिल दिखायी देती है

14_rajeshwari_Layout 1 5/1/2014 6:05 PM Page 179



(तालिका-4)। इस विश्लेषण से ज्ञात होता है कि जहाँ तक कांग्रेस के वोट की बात है तो उसकी प्रकृति में जेण्डर की कोई निर्णायक भूमिका नहीं है। इसके उलट, समष्टिगत स्तर पर कांग्रेस का समर्थन-आधार मुख्यत: मतदाताओं की जाति, वर्ग, आयु तथा शिक्षा आदि से तय होता है।

तालिका-4 में हमने यह जानने की कोशिश की है कि लोकसभा के पिछले दो चुनावों में कांग्रेस और भाजपा को छोड़ कर अन्य प्रमुख दलों को स्त्रियों के जो मत मिले हैं उनकी जेण्डरगत प्रकृति क्या है। चूँकि इनमें अधिकतर दलों की उपस्थिति राज्य-विशेष तक सीमित है इसलिए यह विश्लेषण राष्ट्रीय चुनाव सर्वेक्षण के राज्य स्तरीय आँकड़ों पर आधारित है। यह तालिका हमारे उस पिछले प्रेक्षण

**तालिका-4**

लोकसभा चुनाव (2004, 2009) में प्रमुख राजनीतिक दलों के प्रति स्त्रियों का रुझान

| | 2004 | 2009 |
|---|---|---|
| कांग्रेस | +1 | +2 |
| कांग्रेस सहयोगी दल | 00 | 00 |
| भाजपा | −2 | −2 |
| भाजपा के सहयोगी दल | 00 | 00 |
| वामपंथी दल | +2 | +1 |
| बसपा (उप्र) | +3 | −2 |
| सपा (उप्र) | 00 | +3 |
| द्रमुक (तमिलनाडु) | +1 | +2 |
| अन्ना द्रमुक (तमिलनाडु) | +6 | +2 |
| राजग (बिहार) | 00 | −2 |
| झामुमो (झारखण्ड) | −14 | 00 |
| बीजद (ओडीशा) | −4 | +5 |
| अकाली दल (पंजाब) | −4 | +3 |
| तेदेपा (आंध्र प्रदेश) | +2 | +1 |
| टीआरएस (आंध्र प्रदेश) | 00 | 00 |
| प्रजा राज्यम (आंध्र प्रदेश) | | +2 |
| अगप (असम) | −4 | 00 |
| जद (सेकु) (कर्नाटक) | −2 | +1 |
| तृण मूल (पश्चिम बंगाल) | −8 | −1 |
| भारालोद (चौटाला) (हरियाणा) | −3 | +3 |
| शिव सेना | +2 | 00 |

**स्रोत :** राष्ट्रीय चुनाव सर्वेक्षण : 2004, 2009

14_rajeshwari_Layout 1 5/1/2014 6:05 PM Page 180



को पुष्ट करती है कि स्त्रियों के मत स्वतंत्र न होकर क्षेत्रीय राजनीति की गतिशीलता का अंग बन जाते हैं। देश में कम से कम तीन राज्य तमिलनाडु, उत्तर प्रदेश तथा पश्चिम बंगाल ऐसे राज्य हैं जहाँ की राजनीति स्त्रियों के हाथों में हैं। इन राज्यों में स्त्री-नेतृत्व को हाल में उभरे स्त्री-सशक्तीकरण के विमर्श का परिणाम नहीं कहा जा सकता। ये सभी स्त्री-नेत्रियाँ राजनीति के रूटीनी ढर्रे और दाँव-पेचों से गुज़र कर सत्ता तक पहुँची हैं। जयललिता, मायावती तथा ममता बनर्जी की इस सूची में महबूबा मुफ़्ती को भी शामिल किया जा सकता है। इसके अलावा हम कुछ अन्य स्त्री-नेत्रियों का भी नाम ले सकते हैं जिन्हें स्त्री-सशक्तीकरण के प्रचलित विमर्श के कारण ऊपर से बैठाया गया है। वसुंधरा राजे सिंधिया, राबड़ी देवी ( जिनकी राजनीतिक सक्रियता आजकल समाप्त प्राय: है) तथा हरसिमरत कौर बादल जैसी नेत्रियों को ऐसी ही श्रेणी में रखा जा सकता है। इस सूची में दिल्ली की शीला दीक्षित ही एक नेत्री हैं जिन्हें पहली और दूसरी सूची में एक साथ रखा जा सकता है। क्या पिछले कुछ संसदीय चुनावों में इन स्त्री-नेत्रियों के किसी भी समूह के इर्द-गिर्द स्त्री-मतदाताओं के एक स्पष्ट जनाधार विकसित होने की बात कही जा सकती है? राष्ट्रीय चुनाव सर्वेक्षण के आँकड़े ऐसा कोई संकेत नहीं देते।

जैसा कि इस तालिका से पता चलता है, 2004 के चुनावों में भाजपा को स्त्री-मतदाताओं के बीच तीन प्रतिशत अंकों का जेण्डर-लाभ हासिल हुआ। उस दौर में उत्तर प्रदेश में बसपा का प्रदर्शन आम तौर पर अच्छा रहा था। लेकिन पिछले प्रदर्शन के मुक़ाबले इस बार बसपा को स्त्री-मतदाताओं के बीच पाँच प्रतिशत अंकों का नुक़सान उठाना पड़ा। अगर हम बसपा के स्त्री-मतों में आयी गिरावट को उसके समग्र प्रदर्शन से जोड़कर देखें तो इससे हमारी यह अवधारणा पुख़्ता होती है कि बसपा के पास स्त्री-मतदाताओं का कोई स्पष्ट आधार-समूह नहीं है। इससे हमारे दूसरे प्रेक्षण की भी पुष्टि होती है कि स्त्री-मतदाताओं को इन स्त्री-नेत्रियों का पिछलग्गू नहीं कहा सकता। तालिका के अनुसार इस बार बसपा के मुक़ाबले तमिलनाडु में अन्नाद्रमुक को स्त्री-मतदाताओं के बीच जेण्डर का थोड़ा सा लाभ मिला है। परंतु 2004 के चुनावों की बनिस्बत पार्टी ने स्त्रिओं के बीच चार प्रतिशत अंक गवाएँ भी हैं। ममता बनर्जी की पार्टी तृण मूल कांग्रेस ने इस आम धारणा को ध्वस्त कर दिया है कि स्त्रियाँ हमेशा स्त्री-नेत्रियों का समर्थन करती हैं। 2004 में तृण मूल को स्त्री-मतदाताओं के बीच आठ प्रतिशत अंकों का भारी-भरकम नुक़सान हुआ था। हालाँकि 2009 की चुनावी सफ़लता के समग्र संदर्भ में तृण मूल यह अंतर पाटने में कामयाब रही परंतु फिर भी स्त्री-मतदाताओं के बीच वह मामूली से नुक़सान से नहीं बच पायी।

यह परिघटना ऐसे कई राज्यों में भी देखी जा सकती है जहाँ स्त्री-नेतृत्व का मुद्दा उतना असरदार नहीं है। ओडीशा में बीजद को पिछले चुनावों में स्त्री-मतदाताओं के बीच चार प्रतिशत अंकों का घाटा हुआ था। परंतु 2009 में उसे स्त्री-मतों का स्पष्ट लाभ मिला। पिछले संसदीय चुनाव में राजद की चुनावी दुर्गति में स्त्री-मतदाताओं के एक हिस्से की बेरुखी भी शामिल थी। लेकिन इस प्रसंग में सबसे दिलचस्प कहानी मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी (माकपा) की रही। हाल के वर्षों में जितने भी बड़े चुनाव हुए हैं उनमें वामपंथी दलों को अखिल भारतीय स्तर पर हमेशा स्त्री-मतदाताओं का समर्थन मिलता रहा है और इस नाते उन्हें जेण्डर-मतों का लाभकर्ता कहा जा सकता है। और यह बात बंगाल के बारे में भी सच थी। 2009 के चुनावों में भी वाम ने स्त्रिओं के बीच अपनी स्थिति को बरक़रार रखा है। लेकिन वाम दलों के प्रमुख घटक माकपा को अखिल भारतीय स्तर पर स्त्री-मतों का मामूली और पश्चिम बंगाल में तीन प्रतिशत अंकों का ख़ासा नुक़सान हुआ है।

अगर 2004 तथा 2009 के संसदीय चुनावों में स्त्री-मतों के राज्यवार ढर्रे का तुलनात्मक अध्ययन किया जाए तो मुख्यधारा के छह ऐसे राज्य— उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, ओडीशा, पंजाब, पश्चिम बंगाल तथा हरियाणा आदि चिह्नित किये जा सकते हैं जहाँ स्त्रियों का समर्थन एक पार्टी से दूसरी पार्टी को

**तालिका-5**

विधानसभा चुनाव 2009 के बाद : क्या जेण्डर आधारित मतदाता-मण्डल बन चुका है ?

| राज्य | चुनाव-वर्ष | दल | सार्थकता | गुणांक | महत्त्व |
|---|---|---|---|---|---|
| उत्तर प्रदेश | 2012 | बसपा | हाँ | -.140 | .022 |
| | | सपा | हाँ | .119 | .038 |
| बिहार | 2010 | कांग्रेस | नहीं | .101 | .390 |
| | | भाजपा | नहीं | .121 | .183 |
| | | जद (एकी) | नहीं | -.015 | .846 |
| गुजरात | 2012 | कांग्रेस | नहीं | -.057 | .443 |
| | | भाजपा | नहीं | -.073 | .305 |
| तमिलनाडु | 2011 | द्रमुक | नहीं | .007 | .905 |
| | | अन्ना द्रमुक | नहीं | -.001 | .983 |
| पंजाब | 2012 | अकाली दल | नहीं | .126 | .105 |
| उत्तराखण्ड | 2012 | भाजपा | नहीं | .086 | .464 |
| पश्चिम बंगाल | 2011 | तृण मूल | नहीं | .111 | .163 |

ओर बड़े पैमाने पर खिसका है। इन राज्यों में स्त्री-मतदाताओं के मिज़ाज में आने वाले बदलाव को देखते हुए यह तर्क दिया जा सकता है कि यहाँ के चुनाव परिणामों में स्त्री-मतों की भूमिका निर्णायक रही है। लेकिन जैसा कि हम पहले कह चुके हैं, इस मामले में दूसरी तरफ़ यह दलील भी दी जा सकती है कि स्त्रियों के समर्थन में आया यह बदलाव दरअसल राज्यों की राजनीति का बदलता मिज़ाज ज़ाहिर करता है। अत: इसके आधार पर यह नहीं कहा जा सकता कि भारत के चुनावी परिदृश्य में जेण्डर एक निर्णायक कारक बन चुका है। यह दूसरी धारणा राष्ट्रीय चुनाव सर्वेक्षण के आँकड़ों के सांख्यकीय विश्लेषण से अच्छी तरह साबित हो जाती है। राज्यों में मतदान की वरीयता के जेण्डरगत ढर्रे के अंतर-तुलनात्मक अध्ययन से भी ज़्यादातर मामलों में कुछ ख़ास पता नहीं चलता। इसी तरह अगर राज्य केंद्रित प्रमुख दलों के मतों को दो स्तरीय चर मान कर उनका अंतर-संबंधित विश्लेषण किया जाए और जाति, वर्ग, शिक्षा तथा स्थान आदि जैसे सामाजिक संकेतकों को नियंत्रित रखा जाए तो इससे भी जेण्डर एक निर्णायक कारक सिद्ध नहीं हो पाता।

### 2009 के बाद : क्या स्त्रियों का कोई मतदाता-समूह बन सकता है ?

दूसरे शब्दों में, स्त्रिओं के मतदान से संबंधित आम धारणाओं तथा भारतीय राजनीति में उनकी कारकता के बारे में प्रचलित विचार के उलट सच्चाई यह है कि स्त्रियाँ मुख्यत: जेण्डर की चेतना के तहत मत नहीं देतीं। इसके बजाय चुनावों में उनकी रूटीन भागीदारी क्षेत्रीय स्तर की राजनीतिक समीकरणों जैसे प्रमुख कारकों का हिस्सा होती है। राष्ट्रीय चुनाव सर्वेक्षण के आँकड़ों पर आधारित इन दलीलों को 2009 के बाद विभिन्न राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों के संदर्भ में जाँचने का प्रयास भी किया गया है। ग़ौरतलब है कि मतदान की दृष्टि से उक्त राज्यों में स्त्रिओं की भागीदारी पुरुषों से इक्कीस रही थी (लोकनीति टीम)। इस संबंध में यह भी कहा गया है कि चुनावों में स्त्रियों की इस बढ़ती भागेदारी का सम्भवत: बिहार तथा पंजाब जैसे राज्यों के चुनाव परिणाम पर निर्णायक असर पड़ा है। इस आकलन के आधार पर आगामी लोकसभा चुनावों में स्त्रिओं के मतों का विश्लेषण करना एक दिलचस्प काम होगा। तिहत्तरवें तथा चौहत्तरवें संविधान संशोधनों तथा राजनीतिक दलों द्वारा स्त्रियों

के बीच मतदाता वर्ग गढ़ने की कोशिशों भी स्त्री–मतों की प्रकृति के अध्ययन को एक विचारोत्तेजक काम बना देती है। इस क्रम में हमने जेण्डर के सम्भावित प्रभाव को जाँचने के लिए 2009 के बाद अलग–अलग राज्यों में हुए विधानसभा चुनावों के आँकड़ों का विश्लेषण करने का प्रयत्न किया है। परंतु हमारे इस सांख्यकीय उद्यम से उपरोक्त प्रस्ताव पुष्ट नहीं होते।

तालिका–5 में 2009 के संसदीय चुनावों के बाद अलग अलग राज्यों में होने वाले विधानसभा चुनावों के विश्लेषण का सार दर्शाया गया है। तालिका से अनुमान यह होता है कि स्त्रियों के वोट केवल उत्तर प्रदेश में निर्णायक हो सकते हैं। स्त्रियों ने यहाँ बसपा के मुक़ाबले सपा को संख्यात्मक दृष्टि से ज़्यादा वरीयता दी है। अगर जाति, वर्ग, शिक्षा तथा स्थान जैसे सामाजिक चरों को नियंत्रित रखा जाए तो 2009 के बाद अन्य सभी राज्यों तथा विधानसभा चुनावों में किसी पार्टी विशेष के पक्ष या विपक्ष में जाने वाले स्त्रियों के वोट का पार्टी के चुनावी प्रदर्शन से कोई ख़ास सांख्यकीय संबंध दिखायी नहीं देता। दूसरे शब्दों में, अलग अलग राज्यों में विधानसभा चुनावों के बाद कराये गये सर्वेक्षण पर आधारित हमारा विश्लेषण भारत के चुनावी परिदृश्य में जेण्डर की आमद को साबित नहीं करता। लेकिन ज़ाहिर है कि इसके बावजूद लोगों में यह जिज्ञासा बनी रहेगी कि 2014 के चुनावों में स्त्रिओं की वोट निर्णायक होती है या नहीं।

## संदर्भ

योगेंद्र यादव (2000), 'अंडरस्टैंडिंग द सेकंड डेमॉक्रैटिक अपसर्ज', आर. फ्रेंकेल, ज़ोया हसन, राजीव भार्गव व बलवीर अरोड़ा (सम्पा.), *ट्रांसफ़ॉर्मिंग इण्डिया,* ऑक्सफ़र्ड युनिवर्सिटी प्रेस, नयी दिल्ली.

योगेंद्र यादव (2003), 'द न्यू कांग्रेस वोटर', *सेमिनार,* 526 (जून).

राजेश्वरी देशपाण्डे (2004), 'हाउ जेण्डर्ड वाज़ वुमंस पार्टिसिपेशन इन इलेक्शंस 2004', *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 39, अंक 51.

राजेश्वरी देशपाण्डे (2009), 'हाउ डिड वुमॅन वोट इन इलेक्शंस 2009' *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* राष्ट्रीय चुनाव अध्ययन पर केंद्रित विशेषांक, खण्ड 64, अंक 39.

लोकनीति टीम (2014), 'स्पेशल स्टेटिस्टिक्स : 2013 स्टेट इलेक्शंस', *इकॉनॉमिक ऐंड पॉलिटिकल वीकली,* खण्ड 69, संख्या 6.